मूल कहानी

हरी बिन्दी

आँख खुलते ही आदतन नजर सबसे पहले कलाई परर बंधी घड़ी पर गई सिर्फ साढ़े छह बजे थे। उसने फौरन दुबारा कसकर आँखें बन्द कर लीं और इन्तजार करने लगी कि अब पलंग चरमरायेगा और आवाज आएगी उठना नहीं है क्या? पर अब कुछ देर चुप्पी बनी रही तो आँखें खोलकर देखा, बिस्तर पर अकेली है अरे हाँ रात ही तो राजन दिल्ली गया है। याद ही नहीं रहा। तो अब उठने की कोई जल्दी नहीं है। उसने ढेर सारी हवा गालों में भर कर एक लम्बी साँस छोड़ी और पूरे बिस्तर पर लेट लगा गई। दूसरे सिरे पर जाकर मुंह पर बांह रख कर लेटी तो कानों में घड़ी की टिक-टिक बज उठी। वह मुस्करा दी। उसे कलाई पर घड़ी बांध कर सोने की आदत है। रोज राजन चिढ़कर कहता है, यह क्या, सारी रात कान के पास टिक-टिक होती रहती है। इसे उतारो न। उसने मुंह पर से बांह हटा ली, तकिया खींचकर पेट के नीचे दबा लिया और लम्बे चौड़े पलंग पर बांहे फैलाकर औंधी लोट गयी। ओह, सुबह देर तक सोने में कितना आनंद आता है। राजन होता है तो सुबह छह-साढ़े छह से ही खटर-पटर शुरू हो जाती है। चाय-नाते की तैयारी दोपहर का खाना साथ में और आठ बजे राजन दफ्तर के लिए रुखसत। न जाने राजन को जल्दी उठने का क्या मर्ज है। खैर, आज वह स्वतंत्र है। जो चाहे करें। उसने शरीर को ढ़ीला छोड़ दिया और दोबारा सोने की तैयारी करने लगी।

फिर आँख खुली तो साढ़े आठ बज चुके थे। उसने एक प्याला चाय बनाई और खिड़की का परदा हटाकर बाहर झाँकने लगी। दूर तक धुन्ध छाई थी। आजजरूर बरसात होगी, उसने सोचा। उसे धुन्ध बहुत भली लगती है। जब मालूम नहीं पड़ता, वहाँ कुछ दूर पर क्या है तो अनायास आशा होने लगती है कि कोई अनुपम और मोहक वस्तु होगी। मैं भी खूब हूँ, उसने मुस्करा कर सोचा, मुझे धुन्ध में खुलापन लगता है और सूर्य के प्रकाश में घुटन। चाय पी कर गरम पानी से देर ते नहाया जाए, उसने सोचा और बाल्टी भरने लगी। फिर ठंडे पानी की फुहार ही ऊपर छोड़ ली और एक गजल गुनगुना उठी। बड़े तोलिये से खूब रगड़कर बदन पौंछा। आज

Scanned by CamScanner

एक अद्‌भुत स्फूर्ति और उत्साह का अनुभव हो रहा है। नीले रंग का कुर्ता औरचुड़ीदार पाजामा पहना तो नीले रंग की बिन्दी माथे पर लगाने को हाथ बढ़ गया। फिर न जाने क्या सोचकर उसे छोड़ दिया और बड़ी सी हरी बिन्दी लगा ली। राजन होता तो कहता, नीले पर हरा है क्या तुक है? उसने दर्पण में दिख रही अपनी प्रतिछाया को जवान निकालकर चिढ़ा दिया, कहा, 'तुक की क्या तुक है?' और खिलखिलाकर हँस पड़ी।

दराज खोली तो नजर चाँदी की वाली पर पड़ गई। उठाकर कानों में लटका लीं। विवाह के बाद से पहननी छोड़ दी थीं। नकली हैं न। और जरूरत से ज्यादा बड़ी, और राजन कहता है। एक पुराना बैग हाथ में ले, झपट कर बाहर निकल आई। बरामदे में मुंडू बैठा आराम से सिगरेट फूंक रहा था, राजन की। उसे देखते ही हथेली में छिपा, बड़ी संजीदगी से बोला, "खाना क्या बनाऊँ?"

"कुछ नहीं, "उसने कहा, तुम्हारी छुट्टी।"

मुंडू की घबराई सूरत देख वह हंस पड़ी और बोली, "बेटा मतलब जो तुम्हें अच्छा लगे बना लो। तुम्हें ही खाना है चाहे खाओ चाहे छुट्टी मनाओ।"

बिना यह चिन्ता किए कि ठीक कहाँ जायेगी या क्या करेगी, यह सड़क पर कुछ दूर चलती चली गई। बस इतना जानती है कि आज का दिन यों ही नहीं जाने देगी। कुछ तय करने से पहले बारिश शुरू हो गई। उसने कुछ दूर भाग कर टैक्सी को आवाज लगाई और भीतर घुसकर सोचने लगी, जब टैक्सी ली है तो कहीं-न कहीं जाने को कहना पड़ेगा। जहाँगीर आर्ट गैलरी, उसने जो सबसे पहले मुंह में आया कह दिया।

गैलरी में किसी आधुनिक चित्रकार की प्रदर्शनी हो रही थी। विशेष कुछ समझ में नहीं आया पर आनन्द अवश्य आया। आज कुछ भी करने में आनन्द आ रहा है। एक चित्र के आगे वह काफी देर खड़ी रही। देखा, पूरे कैनवास पर रंग-बिरंगी रेखाएं इधर-उधर दौड़ी चली जा रही हैं। अरे, उसने सोचा, यह तो बिलकुल मेरे कुर्ते की तरह है।

वह जोर से हँस पड़ी, इतनी जोर से कि पास खड़ा एक दढियल उसे घूरने लगा। कहीं यही तो चित्रकार नहीं है? बेचारा! जरूर चित्र अत्यन्त त्रासद रहा होगा।

उसने चेहरा गम्भीर बनाया और दढियल के पास जाकर विनम्रता से कहा, सौरी।" और बाहर निकल आई। बाहर आकर खयाल आया, हो सकता है, वह कलाकार न हो, उद्योगपति हो। दो किस्म के इन्सान ही दाढ़ी रखने का साहस कर सकते हैं, कलाकार और सामन्त। सामना अब रहे नहीं, उनका स्थान उद्योगपतियों ने ले लिया है। तब तो दिन भर वही सोचता रहेगा, उसने सौरी क्यों कहा। उसमें भी नफे की गुंजाइश ढूंढ़ता रहेगा। वह दूने बेग से हंस दी।

Scanned by CamScanner

फिर देखा, बारिश थमी हुई है पर आकाश अब भी काफी शुहबीन लग रहा है। पूरा बरसा नहीं, उसने सोचा और फिर सड़क थाम ली।

सड़क के किनारे रेस्तारां देख याद आया कि काफी जोर से भूख लगी है। भीतर जाकर चटपट आदो दे दिया, "एक गरमागरम आलू की टिकिया और एक आइसक्रीम एक साथ।"

"एक साथ?" बेरे ने आचर्य दिखाया।

"हाँ। कोई एतराज है?"

"जी नहीं। लाया।"

उसे ठंडा और गरम एक साथ खाना भला लगता है कहते हैं, दाँत खराब हो जाते हैं। कितना चटपट काम हो गया आज। राजन रहता है तो बढ़िया जगह बैठकर आराम से खाने की सूची देखने के बाद, सोच-विचार कर आदो दिये जाते हैं। खाकर बाहर निकली तो सोचा, पास किसी सिनेमाघर में पिक्चर देख ली जाए। किस्मत से अंग्रेजी की पुरानी मजाकिया पिक्चर लगी मिल गई। डैनी के की। राजन कहता है, न जाने तुम्हें डैनी के कैसे पसन्द है। मुझे तो उसके बचपने पर हंसी नहीं आती। पर उसे आती है, खूब आती है, फिर हंसी पर हंसी आती है कभी-कभी बे-बात आती है, जैसे आज।

पिक्चर के दौरान वह आज और दिनों से ज्यादा ठहाके लगा रही थी। पास बैठे आदमी की सूरत अंधेरे में दिख नहीं रही थी, पर हंसी की आवाल जरूर सुनाई पड़ रही थी। पता लग रहा था, हंसने में वह उससे दो कदम आगे है। अदाकार की एक खास बेचारगी की मुद्रा पर वे इतनी जोर से हंसे कि उनके हाथ आपस में टकरा गए। सॉरी कहने के इरादे से एक-दूसरे की तरफ मुड़े, पर माफी माँगने के बजाय एक ठहाका और लगा गए।

उसके बाद हर बार यही हुआ। हंसी आने पर वे अनायास एक-दूसरे को देखते और मिलकर हंसते।

खेल खतम होने पर एक साथ बाहर निकले तो देखा, साढ़े चार बजे ही काफी अंधेरा हो चला है। आकाश यों तना खड़ा है कि अब बरसा, अब बरसा।

'कितना सुहावना दिन है," उसने अपने पड़ोसी से कहा।

"सुहावना?" उसने कुछ अचरज से कहा, "या बेरंग?"

"हाँ, कितना सुहावना बेरंग दिन है।"

वह हंस पड़ा, "समझता हूँ। सूरज यहां रोज निकलता है।"

"पर धुंध कभी-कभी होती है। आठ महीनों में आज पहली बार।

"अब मानसून शुरू हो जाएगी?"

Scanned by CamScanner

"हाँ, आज खूब बरसेगा, "उसने कहा। फिर अनायास जोड़ा," कॉफी पियेंगे।"

"जरूर।"

हलकी-हलकी फुहार पड़नी शुरू हो गई थी दोनों भाग कर सामने वाले रेस्तारां में जा घुसे। उसने बाल झटक दिए और बोली, "आपका छाता कहाँ है?"

"छाता?"

"हाँ, आप लोग हमेशा छाता साथ रखते हैं न?"

वह ठहाका मार कर हंस पड़ा, "इंग्लैंड में।" उसने कहा।

कॉफी मंगा कर दोनों सामने, काले पड़ आए, समुद्र को देखते अपने-अपने खयालों में खो गए।

सहसा उसकी आवाज सुनकर वह चौंकी, "आप क्या सोच रही हैं वह जानने के लिए पेनी का खर्चा करने को तैयार हूँ," वह कह रहा था।

"दीजिए," उसने हंसकर कहा।

उसने निहायत संजीदगी से जेब में हाथ डाला और एक पेनी आगे कर दी, उसने उसे हथेली में बन्द कर लिया।

"बतलाना सब सच होगा।"

"मैं सोच रही थी, समुद्र में कूद पड़ूं तो कितनी दूर तक अकेली तैर सकूंगी? और आप? आप क्या सोच रहे थे? पर पेनी नहीं दूंगी, "उसने मुट्ठी कसकर बन्द कर ली, जैसे उसमें किसी आत्मीय का दिया उपहार हो।

"बुरा तो नहीं मानेंगी?" उसने पूछा।

"नहीं," उसने कह दिया पर दिल बैठ गया। अब वहीं घिसी-पिटी आशियाना बातें शुरू हो जाएंगी।

"मैं सोच रहा था बारिश बढ़ जाने पर यहां से बोरली तक का टैक्सी भाड़ा कितना लगेगा?"

वह जोर से हंस पड़ी, दुर्भावना से नहीं, हर्ष से अतिरेक से।

"मुझे रास्ते में छोड़ते जाएंगे तो आधा, "उसने कहा।

"बहुत खूब," उसने यह नहीं पूछा कि वह रहती कहां हैं।

उसे लगा, जीवन में पहली बार ऐसे इन्सान के साथ बैठी है, जो यह नहीं जानना चाहता, उसके पति हैं या नहीं, और हैं तो क्या काम करते हैं।

"समुद्र के जल पर गिरती बरसा की बूंदें कितनी अच्छी लगती हैं," उसने कहा।

"हाँ।"

कुछ देर दोनों चुप रहे।

Scanned by CamScanner

"प्रशान्त महासागर पर जब जहाज जाता है, तो उसके अग्रभाग से चिरता जल चांदी की तरह चमकने लगता है," अतिथि ने कहा।

"क्यों?"

"शायद फोसफोरेसंस के कारण। आपने कभी नहीं देखा?"

"नहीं।"

"मौका मिले तो देखिएगा।"

"आप बहुत घूमे हैं?" उसने हलकी ईर्या के साथ पूछा।

"बहुत," वह याद करके मुस्करा रहा था।

"सबसे अच्छी जगह कौन सी लगी?"

"जब्र जहां हुआ," वह हिचकिचाहट के साथ मुस्कराया, पता नहीं वह समझे या न समझे।

वह हामी में सिर हिलाकर मुस्करा दी।

उसने देखा, कॉफी खतम हो चली है और बैरा बिल लिए आ रहा है। बाहर वर्षा थमने लगी है, धुन्ध भी छांट रही है। नहीं, धुआंधार नहीं बरसेगा। वह संकेत झूठा निकला। अब धुन्ध हट जाएगी और वही तेज प्रकाश वाला सूर्य निकल आएगा।

बिल आने पर उसने उठा लिया, कहा, "न्योता मेरा था।"

अतिथि ने बहस नहीं की। शुक्र है, उसने सोचा, पैसे देने की जिद करने लगता तो कुछ बिखर जाता।

टैक्सी लेकर चले थे कि घर आ गया। उतरते-उतरते पैसे निकालने लगी तो उसने रोक दिया, "रहने दीजिए।"

"क्यों?" उसके माथे पर शिकन पड़ गई।

"आज का दिन मेरे लिए काफी कीमती रहा है।"

"कैसे?"

"मैंने आज से पहले किसी को हरी बिन्दी लगाए नहीं देखा," उसने स्निग्ध स्वर में कहा।

वह जरा ठिठकी कि टैक्सी चल दी। कुछ दूर जाकर आँखों से औझल हो गई।

□□□□